

लेव तोलस्तोय

बच्चों के लिए कहानियां

महान रूसी लेखक लेव तोल्स्तोय (१८२८-१९१०) ने बालकों के लिये छोटी-छोटी कहानियों की कुछ शानदार किताबें लिखी थीं। उन्हें विश्व ललित-साहित्य के अमर कोश में विशेष स्थान प्राप्त है।

अपने बाल-पाठकों के हाथों में हम जो संग्रह सौंप रहे हैं, उसमें बालकों के लिये लिखी गई लेव तोल्स्तोय की सर्वश्रेष्ठ कहानियां शामिल हैं। अकादमिशियन अ० पखोमोव ने इस संग्रह के लिये चित्र बनाये हैं।



लेव तोलस्तोय

बच्चों के लिए कहानियां

रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





बिल्ली का बच्चा

कभी वास्या और कात्या नाम के भाई-बहन कहीं रहते थे। उनके पास एक बिल्ली थी। वसन्त के दिनों में उनकी बिल्ली अचानक ही कहीं ग़ायब हो गई। बच्चों ने उसे हर जगह ढूंढ़ा, मगर वह नहीं मिली। एक दिन वे खत्ती के नज़दीक खेल रहे थे। उन्होंने ऊपर से आती हुई म्याऊं-म्याऊं की बारीक-सी आवाज़ सुनी। वास्या खत्ती की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंचा। कात्या नीचे खड़ी हुई पूछती रही – "मिल गई बिल्ली? मिल गई?" वास्या ने कोई जवाब नहीं दिया। आख़िर उसने चिल्लाकर कहा –



"मिल गई! मिल गई हमारी बिल्ली... उसने बच्चे दिये हैं। ओह, कैसे प्यारे हैं! जल्दी से भागकर यहां आओ!"

कात्या भागकर घर गई और बिल्ली के लिये दूध ले आई।

बिल्ली ने पांच बच्चे दिये थे। जब वे ज़रा बड़े हो गये और उस कोने से थोड़ा बाहर आने लगे जहां वे पैदा हुए थे, तो वास्या और कात्या ने अपना मनपसन्द बच्चा चुन लिया। वह भूरे रंग का था और उसके पंजे सफ़ेद थे। वे उसे घर ले गये। मां ने बिल्ली के बाक़ी बच्चे लोगों को दे दिये और इसे बच्चों के पास रहने दिया। वास्या और कात्या उसे खिलाते-पिलाते, उसके साथ खेलते और उसे अपने साथ सुलाते।

एक दिन वास्या और कात्या सड़क पर खेलने गये और बिल्ली के बच्चे को भी अपने साथ ले गये।

सड़क पर पड़ी हुई सूखी घास हवा में हिल-डुल रही थी। बिल्ली का बच्चा घास के साथ खेलने लगा और बच्चे उसे देख देखकर ख़ुश होने लगे। फिर उन्हें खट्टे पत्ते दिखाई पड़ गये। वे पत्ते बटोरने लगे और बिल्ली के बच्चे के बारे में बिल्कुल भूल गये।





अचानक उन्होंने किसी को ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते सुना – "वापस आओ, वापस आओ!" वास्या और कात्या ने उधर देखा तो पाया कि एक शिकारी तेज़ी से घोड़ा कुदाता आ रहा है और उसके आगे-आगे दो कुत्ते हैं। कुत्तों ने बिल्ली के बच्चे को देख लिया था और वे उसे दबोच लेना चाहते थे। भोला-भाला बिल्ली का बच्चा भागने के बजाय अपनी पीठ झुकाकर बैठ गया और कुत्तों की ओर देखने लगा। कात्या कुत्तों को देखकर बेहद डर गई, चीखी और दूर भाग गई। मगर वास्या जान छोड़कर बिल्ली के बच्चे की



तरफ़ भागा और कुत्तों के साथ-साथ ही उसके पास पहुंचा। कुत्तों ने बिल्ली के बच्चे को दबोचना चाहा, मगर वास्या पेट के बल उसके ऊपर गिर गया और उसने उसे ढक दिया।

तभी शिकारी अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ वहां आ पहुंचा और उसने कुत्तों को खदेड़ दिया। वास्या बिल्ली के बच्चे को घर ले आया और फिर कभी वह उसे अपने साथ मैदान में बाहर नहीं ले गया।

लड़की और खुमियां

दो लड़कियां जंगल से खुमियां बटोर कर घर लौट रही थीं।

उनके रास्ते में रेलवे लाइन आती थी।

उन्होंने सोचा कि गाड़ी अभी दूर है, इसलिये वे पुश्ते पर चढ़कर रेल की पटरी लांघने लगीं।

अचानक उन्हें इंजन का शोर सुनाई दिया। बड़ी लड़की वापस भाग गई, मगर छोटी रेलवे लाइन लांघ गई।

बड़ी लड़की ने चिल्लाकर अपनी बहन से कहा—

"वापस मत आना!"

मगर इंजन नज़दीक आ गया था और इतना शोर मचा रहा था कि छोटी लड़की अपनी बड़ी बहन की बात साफ़ तौर पर न सुन पाई। उसने



सोचा कि उसे वापस भाग आने को कहा गया है। वह पटरी को लांघती हुई वापस भाग चली, उसने ठोकर खाई और उसकी खुमियां बिखर गईं। वह खुमियां समेटने लगी।

इंजन नज़दीक आ चुका था। ड्राइवर ने पूरे ज़ोर से सीटी बजाई।

बड़ी बहन चिल्लाई— "खुमियां पड़ी रहने दो!" मगर छोटी लड़की को लगा कि उसे खुमियां समेटने के लिये कहा गया है। वह पटरियों के बीच रेंगती हुई खुमियां समेटती रही।

ड्राइवर के लिये गाड़ी रोकना सम्भव नहीं था। इंजन ने एकबार फिर पूरे ज़ोर से सीटी बजाई और गाड़ी लड़की के ऊपर से गुज़र गई।

बड़ी लड़की चीख़ उठी और बिलख-बिलख कर रो पड़ी। सभी मुसाफ़िर

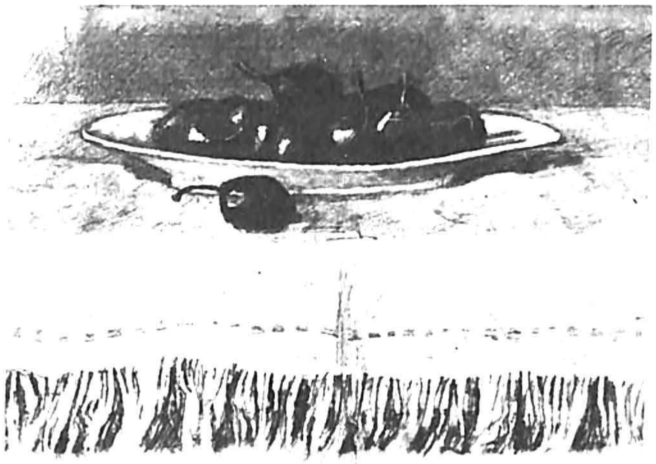


खिड़कियों में से झांक रहे थे ग्रौर कंडक्टर यह देखने के लिये भागता हुग्रा गाड़ी के ग्राख़िरी सिरे पर जा पहुंचा कि लड़की का क्या हुग्रा।

गाड़ी जब गुज़र गई तो सभी ने देखा कि लड़की सिर नीचे की ग्रोर सटाये हुए, हिले-डुले बिना पटरियों के बीच लेटी हुई है।

बाद में जब गाड़ी बहुत दूर चली गई तो लड़की ने सिर ऊपर उठाया, उठकर खड़ी हुई, उसने खुमियां जमा कीं ग्रौर बहन के पास भाग गई।





गुठली

मां ने आलूबुख़ारे ख़रीदे और सोचा कि दोपहर के खाने के बाद बच्चों को देगी। उसने उन्हें तश्तरी में रख दिया। वान्या ने आलूबुख़ारे कभी नहीं खाये थे और इसलिये वह उन्हें बार बार सूंघता रहा। उसे वे बहुत अच्छे लगे। उसका मन उन्हें खाने के लिये बेक़रार हो उठा। वह लगातार आलूबुख़ारों के गिर्द मंडराता रहा। जब कमरे में कोई न रहा तो वह अपने को वश में न रख पाया। उसने एक आलूबुख़ारा उठाकर खा लिया। खाने के पहले मां ने आलूबुख़ारे गिने तो एक कम पाया। उसने बच्चों के पिता को बताया।

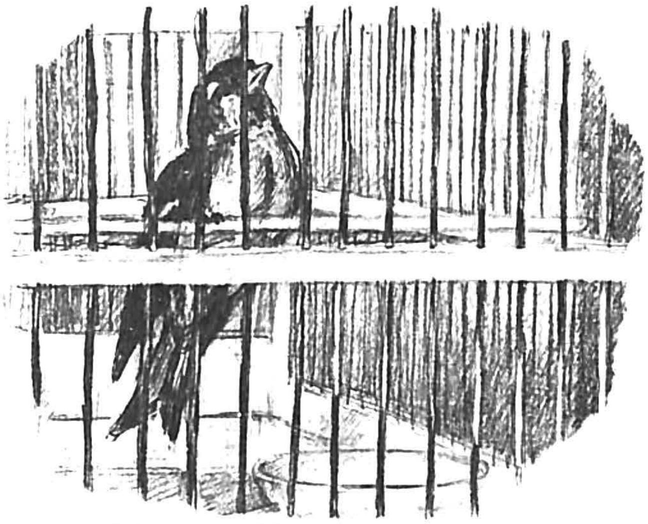
खाना खाते हुए पिता ने कहा—"बच्चो, क्या तुम में से किसी ने एक आलूबुख़ारा खाया है?" सभी ने उत्तर दिया—"नहीं।" वान्या का चेहरा चुक़न्दर की तरह लाल हो गया, मगर उसने भी यही उत्तर दिया—"नहीं, मैंने नहीं खाया।"

तब पिता ने कहा—"तुम में से किसी ने एक आलूबुख़ारा खा लिया, यह बुरी बात है। मगर मुसीबत सिर्फ़ इतनी ही नहीं है। असली मुसीबत तो यह है कि आलूबुख़ारों में गुठलियां होती हैं। अगर किसी को उसे खाने का ढंग न आता हो और गुठली निगल जाये तो वह एक दिन बाद मर जाता है। मुझे बस इसी बात का डर है।"

वान्या के चेहरे का रंग उड़ गया और उसने कहा—"नहीं गुठली तो मैंने खिड़की से बाहर फेंक दी थी।"

सभी हंस दिये, मगर वान्या रो पड़ा।





चिड़िया

सेर्योजा को उसके जन्म-दिन पर बहुत-से उपहार मिले – खिलौने -- भेड़िये, घोड़े और चित्र। मगर सेर्योजा को सब से अच्छा उपहार दिया चाचा ने -- पक्षी फंसाने का जाल। जाल इस तरह से बना हुआ था – एक चौखटे के बीच में जाल के साथ एक छोटा-सा तख़्ता जुड़ा हुआ था। इस छोटे-से तख़्ते पर कुछ दाने रखकर उसे आंगन में रख दिया जाता था। जैसे ही कोई पक्षी तख़्ते पर बैठता, तख़्ता उलटता और जाल ऊपर से अपने आप बन्द हो जाता। सेर्योजा यह उपहार पाकर बेहद ख़ुश हुआ और मां को दिखाने भागा गया।

"यह तो अच्छा खिलौना नहीं है। तुम्हें क्या करना है पक्षियों का? उन्हें सता-तड़पाकर तुम्हें क्या मिलेगा?"

"मैं उन्हें पिंजरे में रखूंगा। वे गायें और चहचहायेंगे और मैं उन्हें दाना-दुनका खिलाऊंगा।"

सेर्योजा दाने लाया, उन्हें तख़्ते पर बिखराकर उसने जाल को बगीचे में रख दिया। वह इस इन्तज़ार में खड़ा रहा कि कब पक्षी उसके जाल में फंसते हैं। मगर पक्षी उससे डरते रहे और जाल के पास नहीं फटके। सेर्योजा जाल को वहीं छोड़कर खाना खाने चला गया। खाना खाकर जब वह लौटा तो जाल को बन्द पाया। उसके नीचे एक पक्षी फड़फड़ा रहा था। सेर्योजा बहुत खुश हुआ, पक्षी को पकड़कर घर ले गया।

"मां, देखो तो मैंने पक्षी पकड़ लिया। शायद यह बुलबुल है। देखो, इसका दिल कैसे धड़क रहा है!"

मां ने कहा –



"यह बुलबुल नहीं, कोई दूसरी चिड़िया है। देखो इसे तंग नही करना। बेहतर यह है कि तुम्हें इसे छोड़ दो।"

"नहीं, मैं इसे अच्छी तरह खिलाऊं-पिलाऊंगा।"

सेर्योजा ने चिड़िया को पिंजरे में बन्द कर दिया। दो दिन तक उसने उसे अच्छी तरह दाना-पानी दिया और पिंजरा भी साफ़ किया। तीसरे दिन वह चिड़िया को भूल गया और उसने उसके पीने का पानी नहीं बदला। मां ने कहा –

"देखो, भूल गये न चिड़िया को! बेहतर यही है कि इसे उड़ा दो।"

"नहीं, मैं अब नहीं भूलूंगा। अभी पानी रख देता हूं और पिंजरा साफ़ करता हूं।"

सेर्योजा पिंजरे में हाथ डाल कर उसे साफ़ करने लगा और चिड़िया डरती हुई इधर-उधर पिंजरे से पंख टकराने लगी। सेर्योजा पिंजरा साफ़ करके पानी लाने गया। मां ने देखा कि वह पिंजरे का दरवाज़ा बन्द करना भूल गया है। उसने पुकार कर कहा—

"सेर्योजा पिंजरे का दरवाज़ा बन्द कर दे, वरना तेरी चिड़िया कमरे की दीवारों से टकराकर मर जायेगी।"

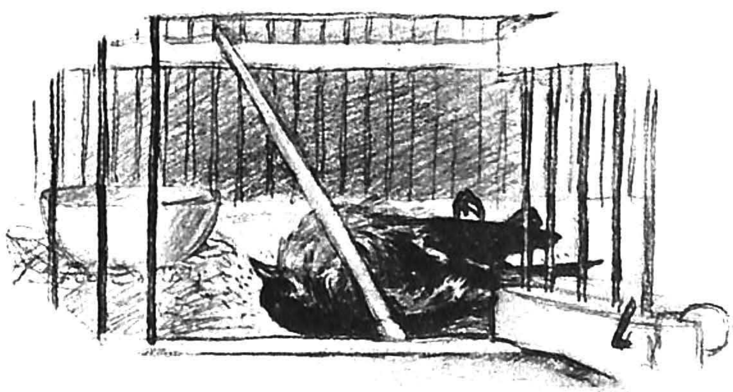
मां इतना कह भी न पाई थी कि चिड़िया को दरवाज़ा मिल गया। वह बहुत ख़ुश हुई, उसने अपने छोटे-छोटे पंख फैलाये और कमरे को लांघती हुई खिड़की की तरफ़ उड़ चली। हां, खिड़की के बन्द शीशे पर उसकी नज़र नहीं पड़ी। वह शीशे से ज़ोर से टकराई और खिड़की के दासे पर गिर पड़ी।

सेर्योजा भागकर गया, उसने चिड़िया को उठाया और फिर से पिंजरे में लाकर डाल दिया। चिड़िया अभी ज़िन्दा थी, मगर छाती के बल पड़ी थी। उसके पंख फैले हुए थे और वह मुश्किल से सांस ले रही थी। सेर्योजा उसे देखता रहा, देखता रहा और फिर रोने लगा।

"मां, अब मैं क्या करूं?"

"अब तुम्हारे किये कुछ नहीं होगा।"

सेर्योजा दिन भर पिंजरे के पास बैठा रहा, चिड़िया को ही देखता रहा। चिड़िया उसी तरह छाती के बल पड़ी रही, गहरी और तेज़ सांसें लेती रही। सेर्योजा जब सोने के लिये बिस्तर पर जाकर लेटा तब तक चिड़िया ज़िन्दा थी। लड़के को बहुत देर तक नींद नहीं आई। जैसे ही वह आंख मूंदता वैसे ही छाती के बल पड़ी हुई गहरी सांसें लेनेवाली चिड़िया की तस्वीर उसकी आंखों के सामने घूम जाती। सुबह को जब सेर्योजा पिंजरे के पास गया तो उसने देखा कि चिड़िया पीठ के बल पड़ी है और छोटे-छोटे पंजे उसके अकड़े हुए जिस्म के साथ चिपके हुए हैं। इसके बाद सेर्योजा ने कभी परिन्दे नहीं पकड़े।



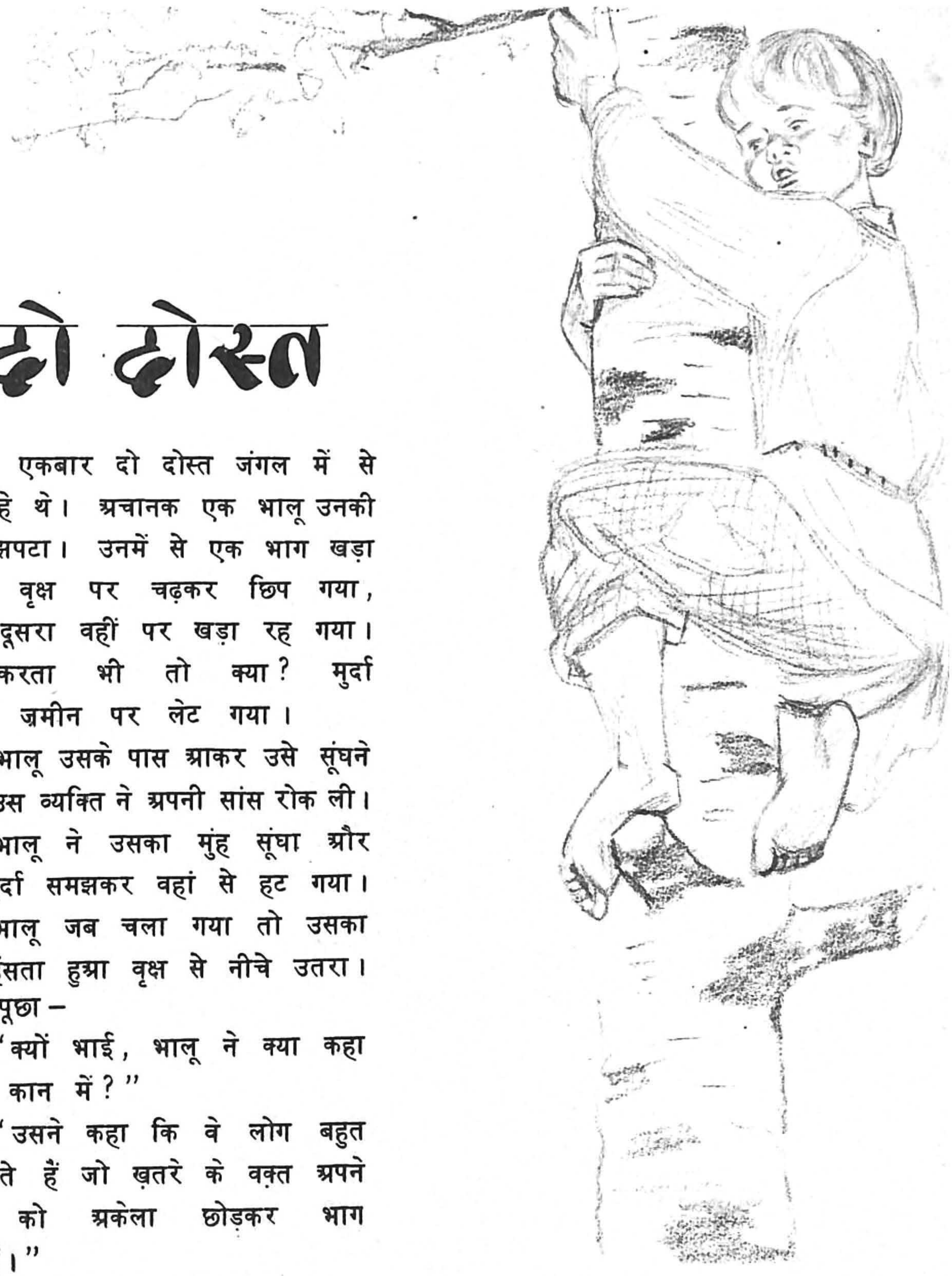


झूठा लड़का

कभी एक लड़का भेड़ें चराया करता था। एक दिन उसने यह ढोंग किया मानो उसे भेड़िया दिखाई दिया है और लगा चिल्लाने—"मदद करो, मदद करो, भेड़िया आया! भेड़िया आया!" किसान उसकी मदद को भागे आये मगर पाया कि वह झूठमूठ चिल्ला रहा था। लड़के ने दो-तीन बार इसी तरह किया। एकबार हुआ यह कि सचमुच भेड़िया आ गया। लड़का लगा चिल्लाने—"जल्दी आओ, जल्दी आओ, भेड़िया आया!" किसानों ने सोचा कि वह पहले की भांति आज भी उन्हें धोखा दे रहा है। उन्होंने लड़के की चीख़-पुंकार पर कान नहीं दिया। भेड़िये ने मैदान साफ़ पाया और एक-एक करके सभी भेड़ों को चीर डाला।







दो दोस्त

एकबार दो दोस्त जंगल में से जा रहे थे। अचानक एक भालू उनकी ओर झपटा। उनमें से एक भाग खड़ा हुआ, वृक्ष पर चढ़कर छिप गया, मगर दूसरा वहीं पर खड़ा रह गया। वह करता भी तो क्या? मुर्दा बनकर ज़मीन पर लेट गया।

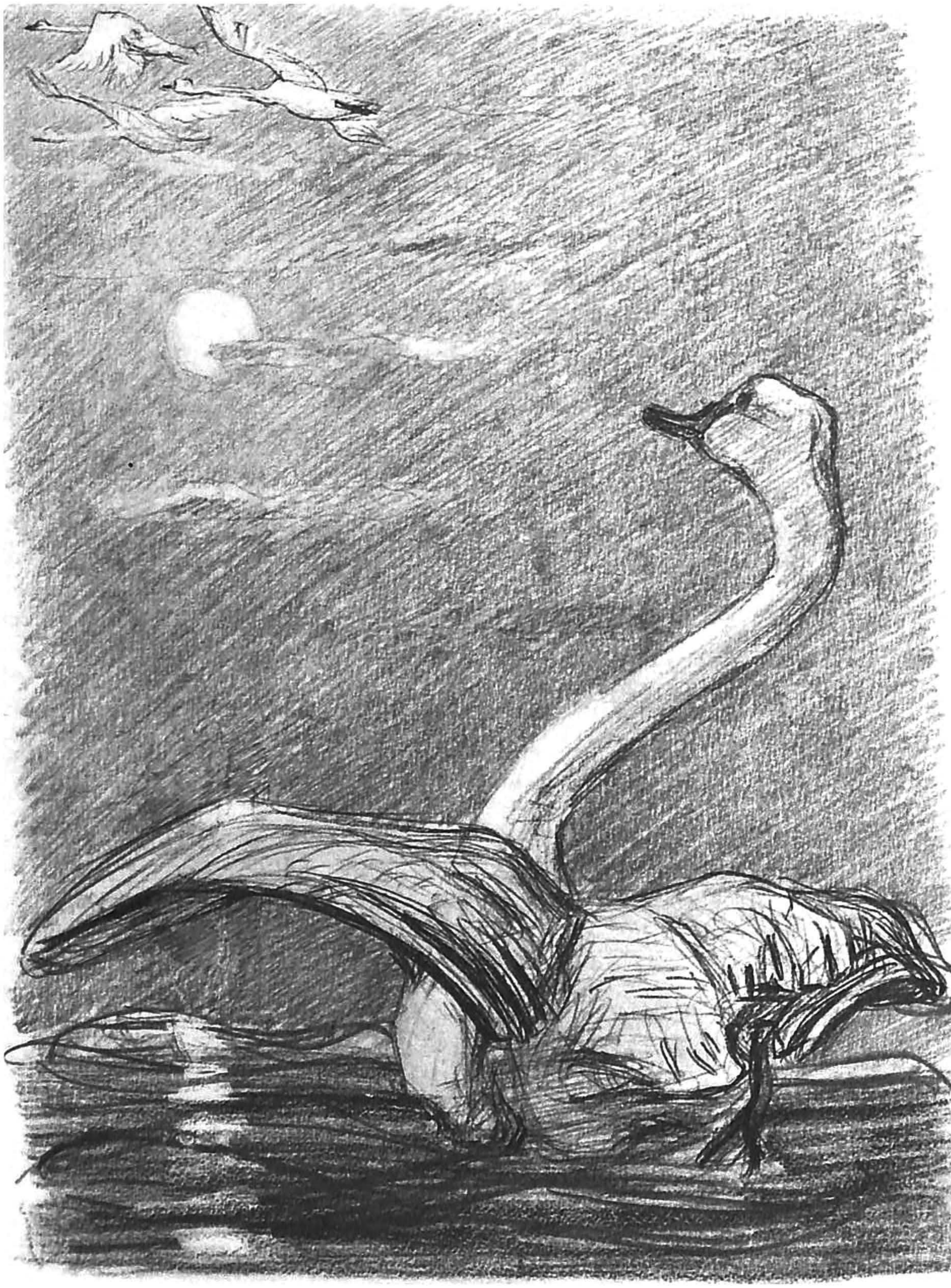
भालू उसके पास आकर उसे सूंघने लगा। उस व्यक्ति ने अपनी सांस रोक ली।

भालू ने उसका मुंह सूंघा और उसे मुर्दा समझकर वहां से हट गया।

भालू जब चला गया तो उसका मित्र हंसता हुआ वृक्ष से नीचे उतरा। उसने पूछा –

"क्यों भाई, भालू ने क्या कहा तुम्हारे कान में?"

"उसने कहा कि वे लोग बहुत बुरे होते हैं जो ख़तरे के वक़्त अपने दोस्त को अकेला छोड़कर भाग जाते हैं।"



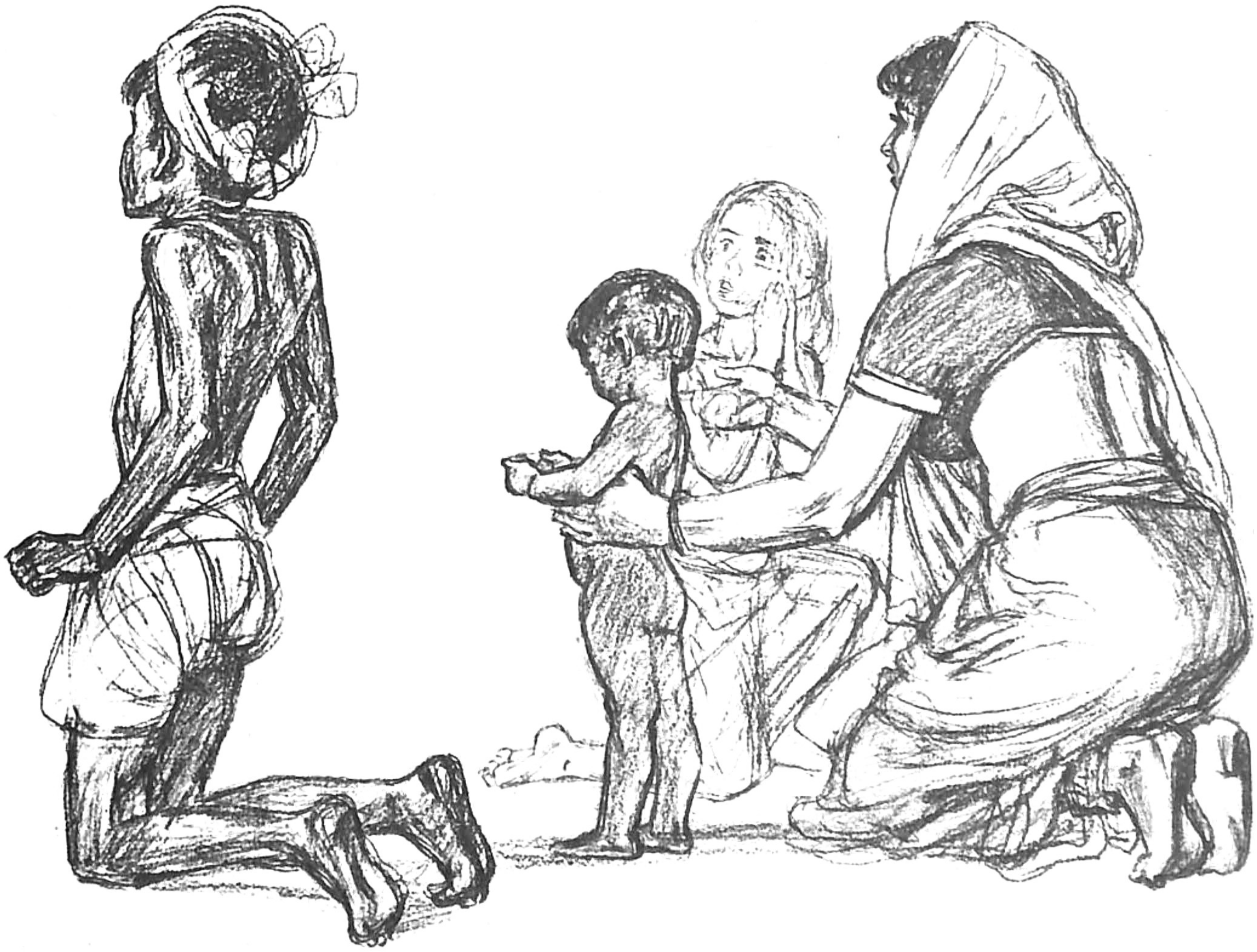
हंसों का दल

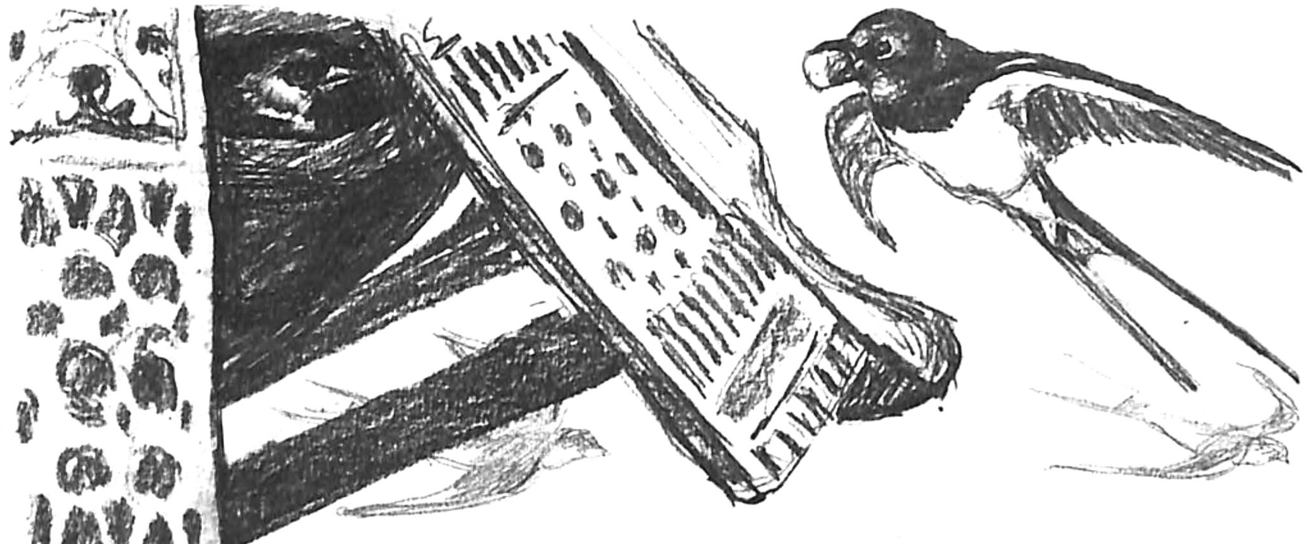
हंसों का एक दल ठण्डे प्रदेशों से गर्म प्रदेशों की ओर उड़ा जा रहा था। वे सागर के ऊपर से उड़ रहे थे। वे आराम किये बिना पानी के ऊपर आकाश में दो दिन और दो रातों तक उड़ते रहे। आकाश में पूनम का चांद हंस रहा था और उसकी चांदनी में हंसों को अपने बहुत नीचे नीला पानी दिखाई दे रहा था। सभी हंस पंख हिलाते-हिलाते थक गये थे, मगर फिर भी वे रुके नहीं, आगे ही आगे उड़ते गये। मज़बूत और बड़ी उम्र के हंस आगे-आगे और कम उम्र के तथा कमज़ोर पीछे-पीछे उड़ रहे थे। एक नौउम्र हंस सब से पीछे उड़ रहा था। उसकी ताक़त जवाब देती जा रही थी। वह जैसे-तैसे पंख हिला रहा था, मगर और आगे उड़ते जाना उसके लिये सम्भव नहीं था। तब उसने पंख झुकाये और नीचे की ओर चल दिया। वह पानी के अधिकाधिक निकट पहुंचता गया जबकि उसके साथी चांद की चांदनी में ज़्यादा-ज़्यादा दूर हटते हुए सफ़ेद धब्बे-से बनते गये। हंस ने पानी में पहुंच कर पंख समेट लिये। उसके सभी ओर शोर मचाता हुआ सागर उसे अपनी लहरों पर झूला-झुला रहा था। चांदनी में नहाये हुए आकाश में हंसों का दल अब एक धुंधली रेखा के समान लग रहा था। गहरे सन्नाटे में उनके पंखों की हल्की-सी सरसराहट सुनाई दे रही थी। जब वे आंखों से बिल्कुल ओझल हो गये तो हंस ने अपनी गर्दन पीछे की ओर कर ली और आंखें मूंद लीं। वह हिलता-डुलता नहीं था, सिर्फ़ सागर की बड़ी-बड़ी तरंगों के साथ ऊपर-नीचे होता था। उषा-बेला के पहले हवा के हल्के-हल्के झोंकों से सागर में छोटी-छोटी लहरियां लहराने लगीं। सागर का पानी हंस की सफ़ेद छाती से टकराता रहा। हंस ने आंखें खोलीं। पूर्व में उषा की लालिमा झलक उठी थी और पूनम का चांद और सितारों का प्रकाश मन्द पड़ चुका था। हंस ने गहरी सांस ली, गर्दन सीधी की, पंख फड़फड़ाये और उनके सिरों से पानी को छूता हुआ ऊपर को उठता गया। वह ऊंचा और ऊंचा होता गया और जब पानी बहुत दूरी पर नीचे रह गया तो वह तेज़ी से उस दिशा में उड़ चला जिधर गर्म प्रदेश थे। रहस्यपूर्ण सागर के ऊपर से वह अकेला ही उस दिशा में उड़ता चला गया जिधर उसके साथी गये थे।



हाथी

किसी भारतीय के पास एक हाथी था। मालिक उसे खिलाता-पिलाता बहुत थोड़ा ग्रौर काम लेता बहुत ज़्यादा। हाथी को एक दिन गुस्सा ग्रा गया ग्रौर उसने मालिक को ग्रपने पैर तले रौंद डाला। मालिक मर गया। उस भारतीय की पत्नी रोने लगी ग्रौर उसने ग्रपने बच्चों को हाथी के पैरों के पास गिराकर कहा – "हाथी तुमने इनके पिता की जान ली है ग्रब इन्हें भी मार डालो।" हाथी नें बच्चों की ग्रोर दखा, सब से बड़े बालक को सूड में लपेटा ग्रौर बहुत धीरे से ग्रपनी गर्दन पर बिठा दिया। हाथी इस लड़के का हुक्म मानने ग्रौर उसके लिये काम करने लगा।





गौरैया और अबाबीलें



एकबार मैं आंगन में खड़ा था और छत में बने हुए अबाबीलों के घोंसले को देख रहा था। मेरे देखते-देखते अबाबीलों का जोड़ा उड़ गया और घोंसला ख़ाली रह गया।

अबाबीलों का जोड़ा जब घोंसले से बाहर था, तभी छत से एक गौरैया फुदककर घोंसले पर आ बैठी। उसने घोंसले में इधर-उधर नज़र दौड़ाई, पंख फड़फड़ाये और उछलकर घोंसले में जा पहुंची। कुछ देर बाद उसने घोंसले से सिर बाहर निकाला और चहचहाने लगी।

कुछ समय बीतने पर एक अबाबील घोंसले में आई। घोंसले में घुसते ही गौरैया पर उसकी नज़र पड़ी। बिन बुलाये मेहमान को घर में देखते ही अबाबील ज़ोर से चीं-चीं कर उठी, उसने पंख फड़फड़ाये और उड़ गई।

गौरैया घोंसले में बैठी हुई चहचहाती रही।

अचानक अबाबीलों का एक दल उड़ता हुआ आया। वे बारी-बारी से घोंसले के मुंह पर ऐसे बैठीं मानो गौरैया को एक नज़र देखना चाहती हों और फिर उड़ गईं।

गौरैया ज़रा भी न डरी। उसने अपना सिर दायें-बायें हिलाया-डुलाया और चहकती रही।

अबाबीलें फिर से घोंसले पर आ बैठीं, उन्होंने वहां कुछ किया और फिर उड़ गईं।

अबाबीलें बेकार ही घोंसले पर नहीं आ कर बैठती थीं। उनमे से प्रत्येक अपनी चोंच में थोड़ा-सा कीचड़ लाती थी और घोंसले के मुंह पर लगाकर चली जाती थी।

अबाबीलें इसी तरह उड़ उड़ कर जाती और घोंसले में लौटती रहीं। वे घोंसले के मुह पर अधिकाधिक कीचड़ लेपती गईं और घोंसले का मुह ज़्यादा से ज़्यादा तंग होता गया।

शुरू में गौरैया की गर्दन नज़र आती थी, मगर बाद में सिर्फ़ सिर दिखाई देने लगा और फिर केवल चोंच। इसके बाद गौरैया बिल्कुल छिप गई। अबाबीलों ने कीचड़ का लेप कर करके गौरैया को पूरी तरह घोंसले में ही बन्द कर दिया। तब अबाबीलें उड़ीं और सरसराती हुई घर के गिर्द चक्कर काटने लगीं।





मादा-उक़ाब

कभी किसी मादा-उक़ाब ने, सागर से दूर, बड़ी सड़क के किनारे वाले एक वृक्ष पर घोंसला बनाया और उसमें बच्चे दिये।

एक दिन इसी वृक्ष के नीचे कुछ लोग काम कर रहे थे। मादा-उक़ाब उसी समय पंजों में एक बड़ी-सी मछली लिए हुए घोंसले की ओर लौटी। लोगों ने मछली देखी तो वृक्ष के गिर्द जमा हो गये और लगे शोर मचाने तथा उक़ाब पर पत्थर बरसाने।

मादा-उक़ाब ने मछली फेंक दी, लोगों ने उसे उठा लिया और चलते बने।

मादा-उक़ाब घोंसले के सिरे पर जा बैठी। उसके बच्चों ने सिर ऊंचे करके चूं-चूं करना और चुग्गा मांगना शुरू किया।

मादा-उक़ाब थकी हुई थी और फिर से सागर पर नहीं जाना चाहती थी। वह घोंसले में गई, उसने बच्चों को पंखों के नीचे छिपा लिया, उनका

तन सहलाया और पंख संवारे। इस तरह उसने मानो यह अनुरोध किया कि वे थोड़ा सब्र करें। मगर मादा-उक़ाब ने अपने बच्चों को जितना अधिक सहलाया, उन्होंने उतने ही अधिक ज़ोर से चीं-चीं की।

तब मादा-उक़ाब उन्हें छोड़कर वृक्ष की ऊंची टहनी पर जा बैठी।

उक़ाब के बच्चे अब और भी अधिक करुण आवाज़ में चूं-चूं, चीं-चीं करने लगे।

तब मादा-उक़ाब ख़ुद ज़ोर से चीख़ उठी, उसने पंख फैलाये और जैसे-तैसे सागर की ओर उड़ चली।

वह शाम ढले घर लौटी, धीरे-धीरे और निचाई पर उड़ती हुई। उसके पंजों के बीच फिर एक बड़ी मछली थी।

जब वह वृक्ष के पास पहुंच गई तो उसने यह देखने के लिये इधर-उधर नज़र दौड़ाई कि कही फिर तो लोग आस पास नहीं हैं। तब उसने झटपट पंख समेटे और घोंसले के सिरे पर जा बैठी।

उक़ाब के बच्चों ने सिर ऊपर को किये और मुंह खोल दिये। मादा-उक़ाब ने मछली के टुकड़े करके अपने बच्चो को खिला दिये।





शार्क मछली

हमारा जहाज़ अफ़्रीकी सागर-तट पर लंगर डाले खड़ा था। दिन भर मौसम बहुत ही अच्छा रहा था, सागर से ताज़ा हवा के झोंके आते रहे थे। किन्तु शाम होने पर मौसम बदल गया। उमस हो गई और सहारा के रेगिस्तान से ऐसी गर्म हवा आने लगी मानो सीधी भट्ठी से आ रही हो।

सूर्यास्त के पहले कप्तान डेक पर आया और उसने ऊंची आवाज़ में आदेश दिया – "नहाने की व्यवस्था की जाये!" पलक झपकते में कई जहाज़ी पानी में कूद गये, पाल को पानी में लटकाया गया, उसे बांध दिया गया और इस तरह एक पाल-तालाब बना दिया गया।

जहाज़ पर हमारे साथ दो लड़के भी थे। उन्होंने पानी में सब से पहले छलांग लगाई, मगर उन्हें पाल-तालाब बहुत छोटा प्रतीत हुआ। उन्होंने खुले सागर में होड़ करने का फ़ैसला किया।

दोनों लड़के पानी में छिपकलियों की भांति दिखाई दे रहे थे। वे अपना पूरा ज़ोर लगाकर वहां तक पहुंचना चाहते थे जहां जहाज़ का लंगर था।

एक लड़का शुरू में अपने साथी से आगे निकल गया, मगर फिर पिछड़ने लगा। इस लड़के का बाप, जो एक अनुभवी तोपची था, डेक पर खड़ा हुआ यह तमाशा देख रहा था। बेटा जब पिछड़ने लगा तो पिता ने चिल्लाकर कहा – "हिम्मत नहीं हारना! और ज़ोर लगाओ!"

अचानक किसी ने डेक पर से चिल्लाकर कहा – "शार्क!" और हम सभी को पानी में इस विराटकाय समुद्री जन्तु की पीठ दिखाई दी।

शार्क सीधी लड़कों की ओर बढ़ी जा रही थी।

"वापस! वापस! लौट आओ! शार्क!" तोपची चिल्ला उठा। मगर लड़कों ने उसकी आवाज़ नहीं सुनी, वे आगे ही आगे तैरते चले गये, पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से हंसते और शोर मचाते हुए।

तोपची को तो जैसे काठ मार गया, ऐसी हालत हो गई कि काटो तो ख़ून नहीं।



जहाज़ियों ने नाव पानी में उतारी, उसमें सवार हुए और अपनी पूरी ताक़त से नाव खेने लगे। किन्तु नाव अभी लड़कों से काफ़ी दूर थी जब कि शार्क केवल बीस क़दम के फ़ासले पर रह गई थी।

लड़कों से जो कुछ चिल्ला-चिल्लाकर कहा गया, शुरू में तो उन्होंने वह नहीं सुना और शार्क को नहीं देखा, मगर फिर उनमें से एक ने पीछे की ओर नज़र घुमाई। हमें उसकी चीख सुनाई दी और तब दोनों लड़के अलग-अलग दिशा में तैरने लगे।

लड़के की चीख सुनकर तोपची मानो होश में आया। आन की आन में वह तोप के पास जा पहुंचा । उसने तोप का मुंह घुमाया, उसपर झुका, निशाना बांधा और पलीता हाथ में लिया।

जहाज़ पर हम जितने भी लोग थे डर के मारे सभी की रगों में ख़ून जम गया था। हम सभी इस इन्तज़ार में थे कि अब क्या होगा।

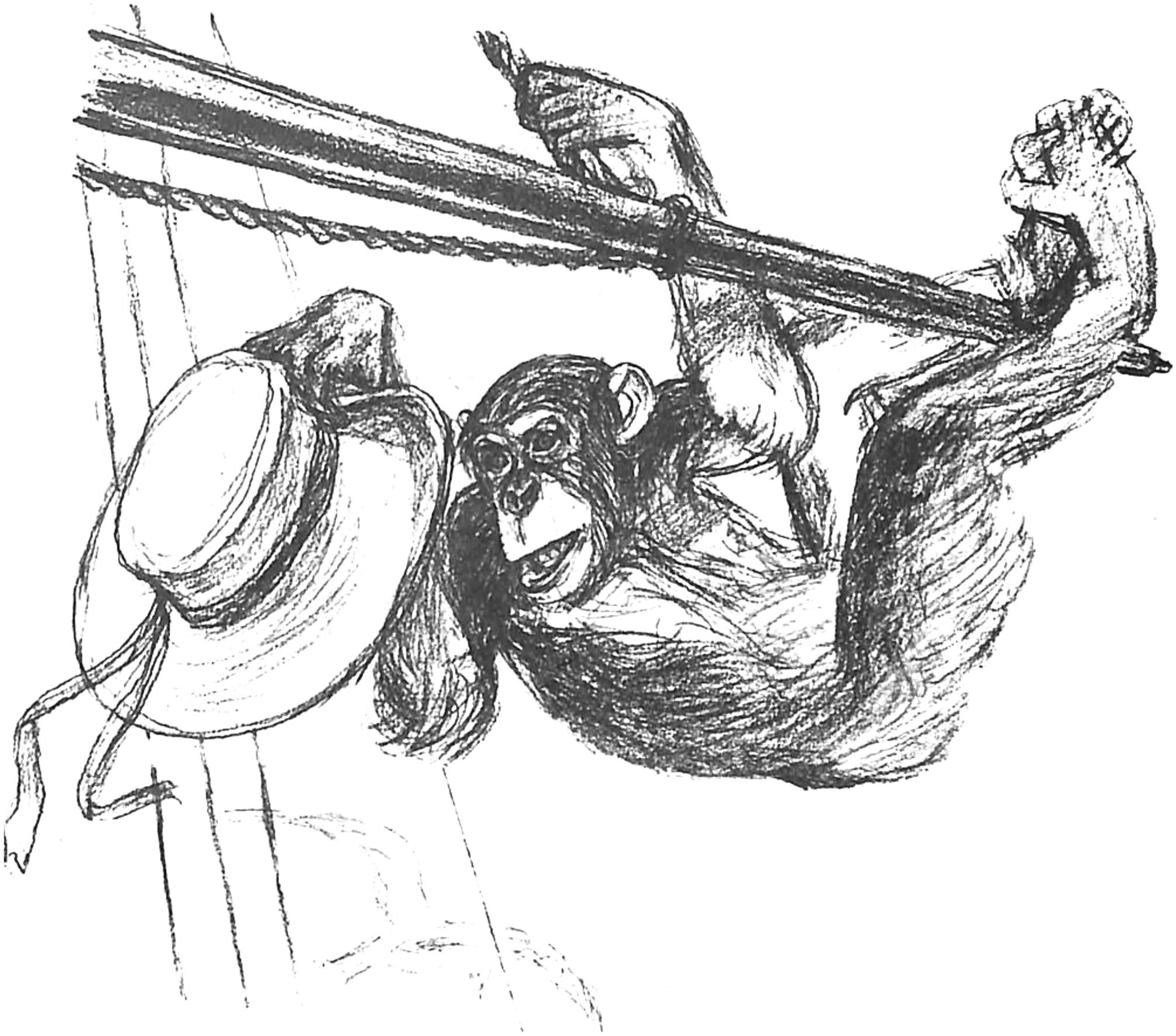
तोप दनदनाई। हमने देखा कि तोपची तोप के क़रीब ही गिर पड़ा और उसने हाथों से मुंह ढांप लिया। शार्क और लड़कों का क्या हुआ, यह हम नहीं देख पाये थे क्योंकि कुछ देर के लिये धुएं ने उन्हें हमारी आंखों से ओझल कर दिया था।

जब पानी की सतह से धुआं हटा तो शुरू में सभी ओर से धीमी-धीमी भनभनाहट सुनाई दी, जो धीरे-धीरे ऊंची होती हुई आखिर ख़ुशी भरे शोर में बदल गई।

बुज़ुर्ग तोपची ने चेहरे से हाथ हटाये, उठा, और समुद्र पर नज़र डाली।

लहरों के ऊपर शार्क का पीला पेट नज़र आ रहा था। कुछ मिनटों में नाव लड़कों के पास जा पहुंची और उन्हें जहाज़ पर वापस ले आई।





छलांग

एक जहाज़ दुनिया-भर के गिर्द चक्कर लगाकर अपने देश लौट रहा था। मौसम शान्त था, इसलिये हर कोई डेक पर खड़ा था। लोगों के बीच एक बड़ा-सा बन्दर इधर-उधर चक्कर काटता हुआ सब का मन बहला रहा था। वह झूलता, उछलता-कूदता, अजीब-अजीब सूरतें बनाता और लोगों को चिढ़ाता था। वह स्पष्टतः अनुभव कर रहा था कि हर कोई उसमें दिलचस्पी ले रहा है, इसलिये वह और भी ज़्यादा शरारतें कर रहा था।

वह कप्तान के बारह वर्षीय लड़के की ओर झपटा, उसके सिर से टोप उतार कर उसने अपने सिर पर रखा और झटपट एक मस्तूल पर जा चढ़ा। सभी हंस पड़े, मगर लड़का नंगे सिर रह गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह हंसे या रोये।

बन्दर मस्तूल की पहली बल्ली पर जा बैठा, उसने सिर से टोप उतारा और दांतों तथा पंजों से उसे तार-तार करने लगा। वह मानो लड़के को जान-बूझ कर चिढ़ा रहा था, लड़के को दिखा-दिखाकर टोप फाड़ता और मुंह बनाता था। लड़के ने उसे मुक्का दिखाया और चीख़ा-चिल्लाया। बन्दर और भी ज्यादा गुस्से में आकर टोप फाड़ने लगा। मल्लाह ज़ोर से हंसने लगे और लड़के का चेहरा ग़ुस्से से सुर्ख़ हो गया। उसने अपनी जाकेट उतारी और बन्दर के पीछे-पीछे मस्तूल पर चढ़ चला। पलक झपकते में वह रस्से के सहारे मस्तूल की पहली बल्ली पर जा पहुंचा। मगर बन्दर और भी तेज़ निकला। लड़के ने जैसे ही टोप छीनने की कोशिश की कि बन्दर जल्दी से दूसरी बल्ली पर जा पहुंचा।

"ऐसे तू मुझ से भागकर नहीं ज़ा सकेगा!" लड़का चिल्लाया और अधिक ऊपर चढ़ गया।

बन्दर ऊपर ही ऊपर चढ़ता गया। लड़का बिलकुल आपे से बाहर हो गया था और इसलिये वह भी पीछे नहीं रहा। इस तरह वे दोनों आन की आन में आख़िरी बल्ली पर जा पहुंचे। सब से ऊपरवाली बल्ली पर जाकर बन्दर अपने एक पंजे से रस्सी को थामे हुए पूरी लम्बाई में फैल गया और उसने बल्ली के सिरे पर टोप को टांग दिया। इसके बाद वह छलांग लगाकर मस्तूल के सिरे पर जा बैठा और दांत निपोरने तथा मुंह बनाने लगा। मस्तूल और बल्ली के सिरे के बीच जहां टोप लटक रहा था, कोई एक या दो मीटर का फ़ासला था। वहां तक पहुंचने के लिये रस्सी और मस्तूल दोनों को छोड़ना ज़रूरी था।

मगर लड़का अब बेहद उत्तेजित था। उसने मस्तूल को छोड़ा और बिना किसी सहारे के बल्ली पर जा पहुंचा।

डेक पर खड़े हुए सभी लोग कप्तान के बेटे और बन्दर का तमाशा देख रहे थे। मगर जब उन्होंने लड़के को रस्सी छोड़कर, बाहें फैलाये हुए बल्ली पर जाते देखा तो सभी के होश हवा हो गये।

ज़रा-सी भूल होते ही वह सीधा डेक पर जा गिरता। पर यदि वह अपने पैर जमाये रहकर बल्ली के सिरे से टोप उतार भी लेता तो भी उसे मुड़कर मस्तूल पर पहुंचने में कठिनाई होती।



हर कोई चुप्पी साधे हुए उसे देख रहा था और इस इन्तज़ार में था कि आगे क्या होता है।

अचानक कोई डर से चीख़ उठा।

यह चीख़ सुनकर लड़का होश में आया। उसने नीचे देखा और लड़खड़ाने लगा।

उसी वक़्त जहाज़ का कप्तान. लड़के का पिता, अपने कक्ष से बाहर आया। वह चिल्लियों का शिकार करने के लिये हाथ में बन्दूक़ लिये था। उसने अपने बेटे को मस्तूल पर देखा तो फ़ौरन उसकी ओर निशाना साध लिया और चिल्लाकर कहा –

"पानी में कूदो! फ़ौरन पानी में कूदो! वरना गोली मार दूंगा!"

लड़का और अधिक लड़खड़ाया, मगर पिता की बात उसकी समझ में नहीं आई।

"लगाओ छलांग, वरना गोली मार दूंगा! .. एक, दो..."

और जैसे ही पिता ने "तीन" कहा कि लड़का सिर के बल पानी में कूद गया।

पानी में लड़के के गिरने से बिल्कुल तोप के गोले का सा धमाका हुआ। मगर इसके पहले कि लहरें उसे निगल जातीं, कोई बीस जवान मल्लाह सागर में कूद गये। लड़का लगभग चालीस सेकंड बाद पानी की सतह पर आया। डेक पर खड़े लोगों को ये चालीस सेकंड एक युग के समान प्रतीत हुए। सतह पर आते ही मल्लाहों ने उसे पकड़ लिया और जहाज़ पर ले आये। कुछ मिनटों के बाद उसके मुंह और नाक से पानी निकलने लगा और फिर वह सांस लेने लगा।

कप्तान ने जब बेटे को सांस लेते देखा तो वह रुंधे कण्ठ से अचानक ऐसे चीख़ उठा मानो किसी ने उसका गला घोंट दिया हो। वह झटपट अपने कक्ष में चला गया ताकि कोई उसे रोते हुए न देख ले!

सिंह और कुत्ता

एक बार लन्दन में जंगली जानवरों का प्रदर्शन किया जा रहा था। उन्हें देखने के लिये दर्शकों को पैसे देने पड़ते थे या बिल्लियां और कुत्ते लाने होते थे जो जंगली जानवरों को खिलाये जाते थे।

एक आदमी का जंगली जानवर देखने को मन हुआ। उसने गली में से एक कुत्ता पकड़ लिया और उसे लेकर जानवरों के मालिक के पास पहुंचा। इस आदमी को जानवर देखने की इजाज़त दे दी गई और कुत्ते को सिंह के पिंजरे में फेंक दिया गया।

इस छोटे-से कुत्ते ने टांगों के बीच दुम दबाई और पिंजरे के एक कोने में दुबक कर बैठ गया। सिंह उसके पास आया और उसने कुत्ते को सूंघा।

कुत्ता पीठ के बल लेट गया, पंजे ऊपर की ओर उठा लिये और दुम हिलाने लगा।

सिंह ने उसे अपने पंजे से छुआ और उलट दिया।

छोटा-सा कुत्ता उछलकर खड़ा हुआ और अपनी पिछली टांगों के बल सिंह के सामने बैठ गया।

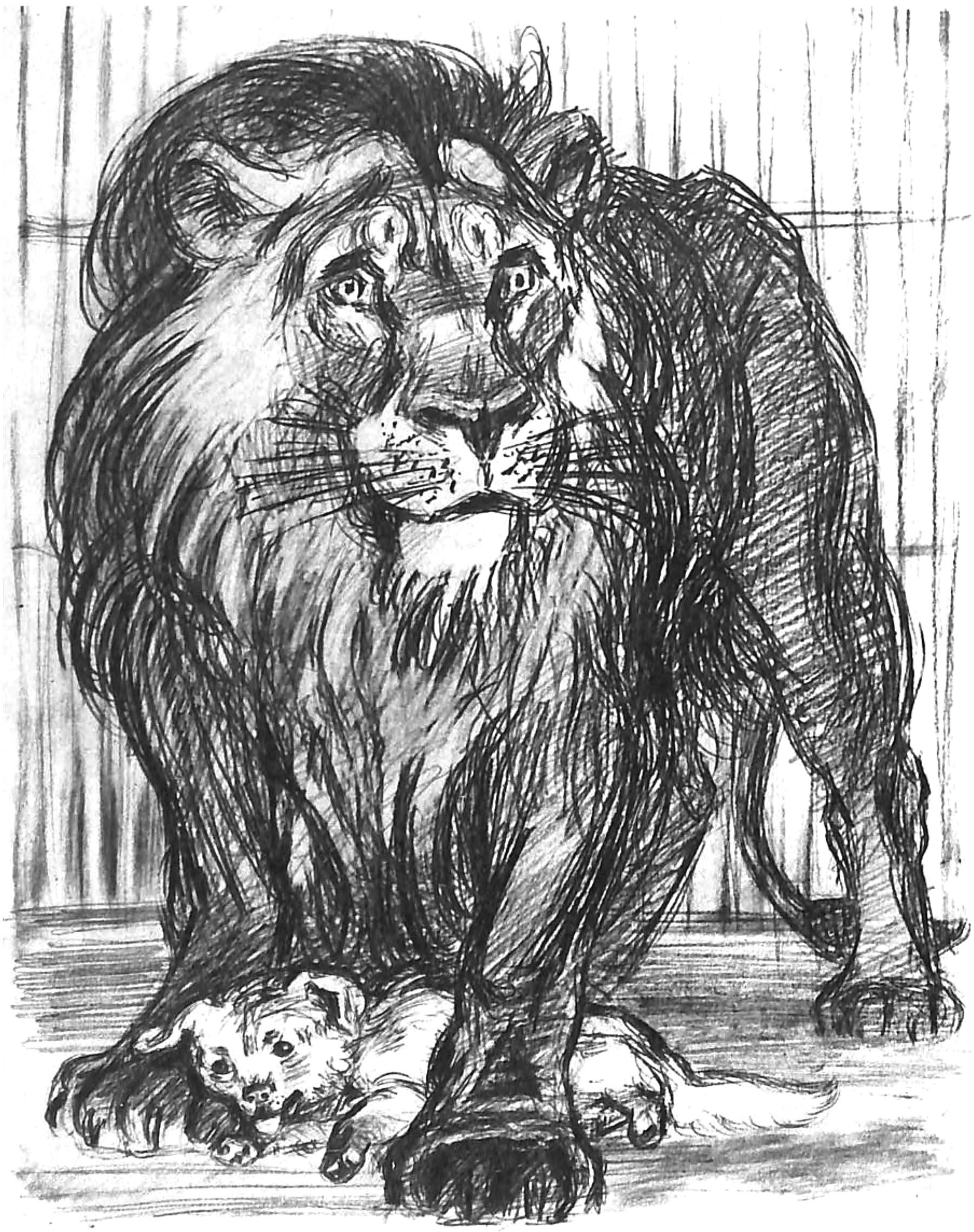
सिंह इस छोटे-से कुत्ते को ध्यान से देखता रहा, उसने दायें-बायें अपना सिर हिलाया, मगर कुत्ते को नहीं छुआ।

जंगली जानवरों के मालिक ने जब सिंह के पिंजरे में मांस फेंका तो सिंह ने उसमें से एक टुकड़ा काट लिया और बाक़ी कुत्ते के लिये छोड़ दिया।

शाम हुई तो सिंह सोने के लिये लेट गया। कुत्ता भी सिंह के क़रीब ही लेट गया और उसने अपना सिर सिंह के पंजे पर रख दिया।

उस दिन से यह छोटा-सा कुत्ता एक ही पिंजरे में सिंह के साथ रहने लगा। सिंह ने कभी भी उसे किसी तरह की हानि नहीं पहुंचाई। वह मालिक द्वारा दिया जानेवाला मांस खाता, कुत्ते के साथ ही सोता और कभी-कभार उसके साथ खेलता भी।

एक दिन एक रईस जंगली जानवरों को देखने आया। उसने अपना कुत्ता पहचान लिया। उसने जानवरों के मालिक से कहा कि कुत्ता उसका है और अनुरोध किया कि वह उसे लौटा दिया जाये। मालिक ने कुत्ता लौटाना



चाहा, मगर जैसे ही कुत्ते को पिंजरे से बाहर निकालने के लिये उसे बुलाया जाने लगा कि सिंह की गर्दन ग़ुस्से से तन गई और वह गरजने लगा।

इस तरह वह छोटा-सा कुत्ता और सिंह साल भर एक ही पिंजरे में रहे।

एक साल के बाद कुत्ता बीमार हुआ और मर गया। सिंह ने खाना-पीना छोड़ दिया, कुत्ते को सूंघता, चाटता और पंजे से हिलाता-डुलाता रहा।

सिंह जब यह समझ गया कि कुत्ता मर चुका है तो वह अचानक उछलकर खड़ा हुआ, उसके अयाल तन गये, वह अपनी दुम को अगल-बग़ल मारने लगा, बार-बार पिंजरे की सलाख़ों से टकराने और फ़र्श को नोचने लगा।

सिंह दिन भर पिंजरे की सलाख़ों से इधर-उधर टकराता, छटपटाता और गरजता-तड़पता रहा। फिर वह मृत कुत्ते के पास जाकर पड़ रहा और चुप हो गया। मालिक ने मरे हुए कुत्ते को वहां से हटाना चाहा, मगर सिंह ने किसी को उसके पास भी फटकने नहीं दिया।

मालिक ने सोचा कि अगर सिंह को दूसरा कुत्ता दे दिया जाये तो वह अपना दुःख भूल जायेगा। उसने एक ज़िन्दा कुत्ता पिंजरे में छोड़ दिया। मगर सिंह ने फ़ौरन ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर वह मृत कुत्ते का अपने पंजों से आलिंगन करके उसी तरह पांच दिनों तक पड़ा रहा।

छठे दिन सिंह मर गया।

अनुक्रम

अनुवादक: मदनलाल "मधु"

ЛЕВ ТОЛСТОЙ
РАССКАЗЫ ДЛЯ ДЕТЕЙ
На языке хинди

Lev Tolstoy
STORIES FOR CHILDREN
In Hindi